9

बचपन से बचपन तक

संघमित्रा आचार्य*

कुछ वक्त से बच्चों के साथ समय बिताने का मौका ढूँढ रही थी। अपने बचपन के बारे में सोचा तो टी.वी., सिनेमा, परदे के पीछे की कहानियाँ, फ़ोटो खींचना और खिंचवाना से संबंधित कुछ अनुभव याद आ गए। मैं इन सारी चीज़ों से आज भी जुड़े रहना पसंद करती हूँ। ऐसे कितने ही अनुभवों को एकजुट करके एक सीख निकालना मुश्किल है, परंतु जब आप किसी और को वैसे दौर से गुज़रते देखते हैं तो शायद उस उम्र की भावनाओं में दोबारा, यानी 'फ़्लैश-बैक' में जाने का मौका मिलता है।

जब शाहपुर उर्दू शाला क्रमाँक 10 की कक्षा 3 व 4 के बच्चों के साथ मैंने अपनी रुचि की एक गतिविधि करवाने के बारे में सोचा तो 'फ़ोटोग्राफी' ही पहला शब्द था जो मेरे दिमाग में आया। जब मैंने हेडमास्टर से इस गतिविधि के बारे में चर्चा की तो वे बेहद खुश हुईं, मगर मेरी ज़्यादा उत्सुकता तो यह जानने में थी कि जब बच्चों को इस बात का पता चलेगा तो उनकी प्रतिक्रिया कैसी होगी।

प्रतिक्रियाएँ और भागीदारी

इतनी उत्तेजित होने वाली बात तो शायद नहीं थी क्योंकि आजकल के बच्चे 'टेक्नोलॉजी' में काफ़ी आगे बढ़ चुके हैं, मगर इस विषय पर चर्चा शुरू करने पर इन बच्चों के चेहरे पर उत्साह सच में देखने लायक था।

मैंने बच्चों से पूछा, "आपने फ़ोटो कब और कहाँ देखी?" फातिमा, समीर और प्रिया — सब एक साथ खड़े होकर चिल्ला उठे और बोले, "एलबम में, दीवार पे, जंगल की, बचपन की, टीचर की आदि।" मैंने भी कुछ देर तक उन्हें एक-साथ चिल्लाने दिया क्योंकि मैं उस उत्तेजना को रोकना नहीं चाहती थी।

आगे जब 'कैमरे' के बारे में पूछा तो सब-के-सब फिर एक साथ बोल उठे, "स्टूडियो में खिचवाई थी, माँ-पप्पा के साथ।"

अब की बार मैंने एक नियम बना दिया और बच्चों से कहा, "जो भी बोलना चाहता है वह पहले हाथ खड़ा करेगा और बाकी सब शांति से उसकी बात सुनेंगे। फिर हममें से कोई और कुछ बोलना चाहे तो हाथ खड़ा करे (हर बार उन्हें इस नियम को याद दिलाना भी एक नियम बन गया था मेरे लिए)।"

हाँ, तो 'कैमरे' के बारे में पूछते ही बिलाल बोला, "मैंने तो बंबई में खिंचवाई थी, जंगल की खूब सारी फोटू ली थी हम लोगों ने। मेरे पप्पा के पास एक छोटू

एकलव्य द्वारा प्रकाशित पत्रिका शैक्षणिक संदर्भ के मई-जून 2014 अंक से साभार

कैमरा है।" बिलाल को बंबई के बारे में काफ़ी कुछ पता था और उसके सारे उदाहरणों में 'बंबई' ज़रूर आ टपकता। बाकी बच्चों से भी कुछ सुने हुए उदाहरण ही मिल रहे थे। मैंने उनसे पूछा, "अगर आपको एक कैमरे के साथ अकेला छोड़ दिया जाए, तो आप कैसी तस्वीरें खींचना चाहेंगे?" उनके उत्तर (मेरी नज़र में) तो अजीब ही थे, "खाली ब्लैक-बोर्ड की, स्कूल के पीछे की दीवार की, पढ़ते हुए बच्चों की, बाहर से स्कूल बोर्ड की, ए-बी-सी-डी.....की खाली क्लास की, ...आदि।"

बिलाल बोला, "मैं तो शेर की लूँगा। हम सभी पिकनिक में बाहर जाएँगे गार्डेन में और मैं ही सभी की फोटू लूँगा। मेरे पप्पा के पास जो कैमरा है, मैं उससे फोटू लूँगा। एक पतला-सा कैमरा जिसे 'इप्पल' कहते हैं।" फ़िर समीर ने जोड़ा, "और वो टच-स्क्रीन भी होता है।"

फ़िर जब मैंने बच्चों को बताया कि अब हम सब कैमरे से स्कूल की फ़ोटो खींचेगे, तो वे बहुत खुश हुए।

अपनी मर्ज़ी से खींचो तस्वीरें

सबसे पहले तो मैंने उन्हें छ:-छ: की तीन टुकड़ियों में बाँट दिया। फ़िर उन्होंने खुद ही अपने ग्रुप का नामकरण किया-'एलिएन्न', 'अजमेर' और 'मक्का'। तीनों टीमों को बारी-बारी से अलग ले जाकर कैमरे की सेटिंग्स के बारे में जानकारी दी। एक-दो बार तो काफ़ी शोर भी हुआ, पर बाद में अनुशासन को मानते हुए सब-के-सब काफ़ी धीरज से सुनने के लिए तैयार हो गए। उन्हें ज़रा भी देर नहीं लगी सारी बातें सीखने में। बारी-बारी से तीनों ग्रुप को स्कूल के अंदर ही घुमाया गया।

बच्चे बहुत ही उत्साह से भरे हुए थे। कैमरे को हाथ में पाने के बावजूद, उनका आपसी तालमेल देखने लायक था। हर बच्चा दो-तीन फ़ोटो खींच कर कैमरा अपने अन्य साथियों को दे देता और फ़िर अपनी बारी आने का इंतज़ार करता। वे एक-दूसरे से कहते, "तू यहाँ की फोटू ले, बहुत अच्छी आएगी," साथ ही साथ हिदायत देते जैसे- कैमरे को थोड़ा नीचे से पकड़ और अच्छी फोटू आएगी।

कुछ दिनों बाद बच्चों को स्कूल के बाहर ले जाकर कैमरे का इस्तेमाल करने का मौका मिला जिसका उन्होंने काफी आनंद भी उठाया। बच्चों को सबसे ज़्यादा मज़ा आ रहा था भागती हुई बिल्ली को पकड़ने की कोशिश करने और उसकी तस्वीर लेने में। साथ ही इमारतों और मोटर-साइकिल, आते-जाते ऑटोरिक्शा, पास की दुकानों की तस्वीरें लेने में भी काफ़ी मज़ा आ रहा था।

उनकी पसंद को समझना मेरे लिए थोड़ा मुश्किल हो रहा था, इसलिए उस वक्त उन बातों को न समझने की कोशिश ही मेरी समझदारी थी। उनका व्यवहार ऐसा शायद इसलिए भी था क्योंकि निर्देश देते हुए मैंने ही कहा था कि वे कैसी भी तस्वीरें खींचते रहें – टेढ़ी-मेढ़ी, छोटी-बड़ी, ऊपर-नीचे...।

तस्वीरों की प्रदर्शनी

तस्वीरें खींचने की कवायद के बाद सभी बच्चों ने अपनी-अपनी टीम में बैठकर अपनी खींची हुई तस्वीरों को एक सफ़ेद कागज़ पर चिपकाया और सभी खाली जगहों को रंगों से भर दिया। लगभग एक-डेढ़ घंटे तक उन तस्वीरों को देख वे आपसी चर्चा में खोए रहे और

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 54 28-12-2015 AM 11:56:55

बीच-बीच में आपस में लड़ते और कहते कि यह मैंने खींची है। मुझे दे, मैं चिपकाऊँगा। लेकिन वह झगड़ा कुछ ही पल के लिए था। वे सब आपसी बातचीत में ऐसे खो गए कि आसपास के टीचर, मुझे और सभी को भूल गए थे।

अगली गतिविधि थी एक-दूसरे को तस्वीरों के माध्यम से अपनी कहानी सुनाना। सभी बच्चों ने अपनी एलबम में टूटे-फूटे अक्षरों में अपना नाम लिखा और रंग भरा।

जब सब तैयारियाँ हो गईं तो बच्चे छोटी-बड़ी कक्षाओं के सभी छात्रों और शिक्षकों को बुला लिया जैसे कि सच में 'एग्ज़िबिशन' ही हो। अब तो सच, उस शोर को संभालना मुश्किल ही था। कितना मज़ा आ रहा था उन्हें अपनी कहानियों (तस्वीरों) को दूसरों को दिखाने में।

कुछ यादें, कुछ सवाल

ये तो सच है कि ये बच्चे कैमरे (डिज़िटल या मोबाइल) से पहले से ही परिचित हैं पर स्कूल परिसर में ऐसी चीज़ों का इस्तेमाल उन्होंने शायद ही किया होगा। इस गतिविधि की वजह से बच्चे मुझसे और नज़दीकी से जुड़ गए। जब भी स्कूल जाती हूँ, फ़िर से चर्चा शुरू हो जाती है। सब-के-सब आकर घेर लेंगे और फ़िर से उन तस्वीरों के बारे में बोलना शुरू कर देंगे। मैं उनसे बातें करते ही अपने बचपन में खो जाती हूँ। अपने सबसे अच्छे शिक्षक के बारे में सोचने लगती हूँ।

इस अनुभव के बाद कुछ सवाल मेरे दिमाग में घुमड़ने लगे – क्या सच में बच्चे अपनी समझदारी से महँगी चीज़ें इस्तेमाल करना नहीं जानते, क्या हमेशा ज़रूरी होता है उन्हें डाँट-मारकर सिखाया जाए कि कीमती वस्तुओं का इस्तेमाल कैसे करें वे जिन चीज़ों को अपनेपन और अधिकार से अपनाते हैं, क्या उन चीज़ों का वे सावधानी से उपयोग नहीं करेंगे, उन्हें ऐसी साधारण बातें सिखाने के लिए भी नियम-कानून या पिटाई की ज़रूरत होती है, या हम बड़ों की अधीरता का यह एक प्रमाण है। मैं इन बातों में उलझी हूँ क्योंकि कभी शायद मुझे भी बड़ों ने महँगी चीज़ों का इस्तेमाल करने से रोका था उस समय मेरे पास रोने के अलावा और कोई उपाय नहीं था और मेरी जिज्ञासाओं का उनके पास कोई समाधान नहीं था।

मुझे अच्छा लगा कि इस अनुभव के दौरान मेरे बचपन से किसी और का बचपन जैसे बातों-बातों में जुड़ गया, एक दोस्ताना रिश्ते की ओर कदम बढ़ाते हुए।

संघमित्रा आचार्य ने कैवल्य एजुकेशन फाउंडेशन, अहमदाबाद के गाँधी फैलोशिप प्रोग्राम के तहत अहमदाबाद के म्यूनिसिपल स्कूलों के साथ 'प्रिंसीपल लीडरशिप डेवलपमेंट प्रोग्राम' पर काम किया है। हाल ही में 'फ़ोटोग्राफी विद चिल्ड्रन इन स्कूल' प्रोजेक्ट का संचालन किया है।

❑❑❑

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 55 28-12-2015 AM 11:56:55